2

विषयों की तृष्णा को छोड़ के..

विषयों की तृष्णा को छोड़ के, संयम की साधना में, चल पड़े नेमिकुमार ।
परिग्रह की चिन्ता को तोड़ के, निज के चिन्तन में, रम रहे नेमिकुमार॥ टेक॥
यह जीव अनादि से, है मोह से हारा,
चहुँगति में भटक रहा, दुख सहता बेचारा ।
कोई नहीं है शरण अतः आतम की शरण में,
जाना जगत असार, चल पड़े नेमिकुमार ॥१॥
विषयों की तृष्णा को छोड़ के, संयम की साधना में, चल पड़े नेमिकुमार ।
प्रभु चल पड़े वन को, ध्यायें निज चेतन को,
सब राग तन्तु तोड़, काटे भव वन्धन को ।
फिर मोह शत्रु नाशें और क्षायिक चारित्र धारें,
जिसमें है आनन्द अपार, चल पड़े नेमिकुमार ॥२॥
विषयों की तृष्णा को छोड़ के, संयम की साधना में, चल पड़े नेमिकुमार ।
कर चार घातिये क्षय, प्रगटे चतुष्टय अक्षय,
सारी सृष्टि झलके, परिणति निज में तन्मय ।
शाश्वत शिवपद पायें, और अब मुक्ति वधु व्याहें,
हो भव-सागर पार, चल पड़े नेमिकुमार ॥३॥
विषयों की तृष्णा को छोड़ के, संयम की साधना में, चल पड़े नेमिकुमार ।

अहो! धन्य हैं २२वें तीर्थंकर नेमिकुमार! जिन्होंने सभी इन्द्रिय विषयों की तृष्णा का त्याग कर दिया है, जो अब मात्र अपने अन्तरंग में विद्यमान आत्मा में लीन होने हेतु संयम के मार्ग पर अग्रसर हो चुके हैं। उन्हें अब अपने राज-वैभव के परिग्रह की चिन्ता नहीं है, वे तो निजात्म के चिन्तन में ही रमने की ओर अग्रसर हैं॥ टेक॥

निश्चय से देखा जाये तो यह जीव इस पर्यायमात्र जितना नही अपितु यह तो अनादि से इस जग में रहने वाला है, परन्तु अनन्त संसार का कारण अर्थात मोह उससे विजयी नही हो पाया अतः चतुर्गति में परिभ्रमण कर रहा है, अनन्त दुःख सह रहा है। इस जीव को संसार के परमार्थ का भान नही कि इस जगत में सुख-दुख हेतु कोई शरण नही, निश्चय शरण तो निज भगवान आत्मा ही है। लेकिन देखो! इस सत्य से नेमिकुमार का तो अब परिचय हो गया है अतः वे इस संसार को असार जानकर अपना मोक्षमार्ग प्रशस्त करने चल पडे हैं॥ १॥

नेमि प्रभु तो अब वन की ओर उन्मुख हो चुके हैं, वहाँ समस्त परिग्रह का त्यागकर वे निज चेतन का ही ध्यान करेंगे। उन्होंने सभी राग के बंधनों को तोड दिया है अतः संसार मोह के बंधन को काटने हेतु वे तत्पर हैं। छठवें-सातवे गुणस्थान में झूलने वाले नेमि मुनिराज जब उग्र ध्यान में लीन होंगे, तो वे श्रेणी आरोहण कर सम्पूर्ण मोह का क्षय कर बारहवें गुणस्थान को प्राप्त हो जायेंगे। जहाँ दर्शन एवं चारित्र मोह के क्षय होने से क्षायिक सुख व चारित्र की प्राप्ति होगी और अपार अतीन्द्रिय सुख का वे भोग करेंगे॥ २॥

बारहवें गुणस्थान में जब वे आत्मा में क्षायिक भाव से लीन होंगे तो कुछ ही समय पश्चात उन्हें चार घातिया कर्मों का क्षय हो जायेगा और वे अनन्त चतुष्टय के धारी जिनेन्द्र परमात्मा बन जायेंगे और उनके ज्ञान में सम्पूर्ण विश्व अपने द्रव्य-गुण-पर्याय सहित जानने में आयेगा। तथापि वे उनमें नही अपने आत्मस्वभाव में ही केन्द्रित होंगे। तेरहवें गुणस्थान में उनके तीर्थंकर नामकर्म प्रकृति का उदय होगा और सौधर्म इन्द्र की आज्ञा से समवशरण की रचना होगी। और उसके भी कुछ समय पश्चात जब वे योग निरोध करके चार अघातियाँ कर्मों का भी क्षय कर देंगे तब उनका परिणय मुक्ति रूपी वधु से होगा अर्थात वे शाश्वत सिद्ध अवस्था को प्राप्त होंगे और संसार समुद्र से सदा-सदा के लिये पार हो जायेंगे॥ ३॥